आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 6 बीकानेर, फरवरी, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

पशुपालन में कौशल विकास हमारी समृद्धि की कुंजी है

प्रिय पशुपालक भाईयों–बहनों,

बेरोजगारी से निपटने और आजीविका के वैकल्पिक उपायों के लिए कौशल विकास के कार्यक्रम और प्रशिक्षण महत्वपूर्ण होते हैं। राजस्थान पूरे देश में कौशल विकास के प्रशिक्षण में सबसे आगे है, यह हमारे लिए खुशी की बात है। वेटरनरी विश्वविद्यालय भी इस कार्य में पीछे नहीं है। राज्य के 17 जिलों में विश्वविद्यालय के परिसर हैं। इन परिसरों में स्थित पशुचिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्रों और संस्थानों में पशुपालन से सम्बन्धित कौशल विकास के प्रशिक्षण नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं। इन प्रशिक्षण कार्यों में पशुपालन से संबंधित सभी विधाओं यथा हरा चारा उत्पादन, उन्नत पशुपोषण, पशुधन संरक्षण और उत्पादन बढ़ाने की तकनीकों, स्वदेशी नस्ल सुधार, पशुधन स्वास्थ्य जैसे विषयों को शामिल किया गया है। इन कार्यक्रमों में कार्यरत पशु चिकित्सकों के लिए आधुनिक पशु चिकित्सा की तकनीकों, रोग निदान उपायों जैसे प्रशिक्षण भी आयोजित किए जा रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में युवा महिलाओं की भी भागीदारी सुनिश्चित की गई है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पशुपालन और कृषि आधारित पशुपालन से सम्बद्ध 50 विभिन्न क्षेत्रों में पशुपालकों के प्रशिक्षण का लक्ष्य निर्धारित किया है। विश्वविद्यालय प्रति वर्ष 20 हजार पशुपालकों और कृषकों को प्रशिक्षण दिए जाने में समर्थ हो जाएगा। राज्य में युवाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण के कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं। युवाओं को आनॅ–लाइन सम्पर्क कर प्रशिक्षण के लिए बुलाया जाएगा। पशुपालन सेक्टर आजीविका का सबसे सुलभ, सरल और नियमित आमदनी का एक जरिया है। राज्य में उपलब्ध जैव विविधिकरण पशुपालन की आदर्श परिस्थितियां और अनुकूल वातावरण इसके लिए सर्वथा उपयुक्त है। राजस्थान पशुधन उत्पादन में भी पूरे देश में अव्वल है जिसमें ऊन, मीट, दूध शामिल है। सकल घरेलू आय में भी 10.27 प्रतिशत योगदान पशुपालन का है। आईए! हम सब मिलकर अपने पांरपरिक पशुपालन व्यवसाय को पूरी शिद्दत के साथ अपनाएं क्योंकि इससे हम खुशहाल और समृद्ध बन सकेंगे।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

67 वें राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के दीवान-ए-आम में आयोजित 'एट होम' कार्यक्रम में शिरकत करते हुए माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह एवं मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

मुख्य समाचार

मुख्यमंत्री श्रीमती राजे द्वारा राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन

माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने गोगामेड़ी (नोहर) में राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रौन्नति प्राधिकरण द्वारा गोगामेड़ी मंदिर विस्तार योजना के प्रथम चरण के शिलान्यास उपरान्त 19 जनवरी, 2016 को राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन करके पशुपालन की विभिन्न तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने स्वदेशी गौवंश के विकास और संवर्द्धन के लिए किए जा रहे उपायों की जानकारी प्रदर्शित मॉडल, चार्ट और रंगीन फ्लेक्स के माध्यम से दी। इस अवसर पर हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से उत्पादित हरा चारा और अजोला चारा उत्पादन प्रदर्शनी के मुख्य आकर्षण रहे। जल संसाधन मंत्री डॉ. राम प्रताप, देवस्थान राज्य मंत्री श्री अमराराम, गौपालन राज्य मंत्री श्री ओटाराम देवासी, प्रौन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री औंकार सिंह लखावत, श्री राहुल कस्वां, सांसद चूरू, श्री कुलदीप धनकड, प्रदेश महामंत्री, सुबीर कमार सम्भागीय आयुक्त, श्री गिरीराज मीणा पुलिस महानिरीक्षक सहित जन प्रतिनिधियों व किसानों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर राजुवास द्वारा किए जा रहे कार्यों को सराहा।

मुख्यमंत्री श्रीमती राजे द्वारा 'चारागाह विकास की तकनीक में वेटरनरी विश्वविद्यालय का नया आयाम' पुस्तिका का विमोचन

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 25 जनवरी 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित 'एट होम' कार्यक्रम के बाद राजुवास के हाइड्रोपोनिक्स तकनीकी केन्द्र द्वारा हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा सेवण घास की पौध तैयार कर उसका सफलतापूर्वक रोपण किए जाने के एक प्रकाशन का विमोचन किया। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने "चारागाह विकास की तकनीक में वेटरनरी विश्वविद्यालय का नया आयाम" नामक पुस्तिका को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्रीमती राजे ने पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र के त्रैमासिक "पशु आहार एवं चारा बुलेटिन" का नवीनतम अंक भी जारी किया। प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा व प्रमुख अन्वेषक ने इस पुस्तिका व चारा बुलेटिन का सम्पादन किया।

नेशनल लाईवस्टॉक चैम्पियनशिप एण्ड एक्सपो-2016 में राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन

श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब) में 8वीं नेशनल लाईवस्टॉक चैम्पियनशिप एण्ड एक्सपो–2016 का आयोजन 8 से 12 जनवरी 2016 तक किया गया। एक्सपो–2016 में कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विशिष्ट अतिथि रूप में शिरकत की। पंजाब सरकार के पशुपालन विभाग और फिक्की के संयुक्त तत्वावधान में एक्सपो में राजुवास द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपोषण और पशुचिकित्सा उपचार के क्षेत्र में विकसित की गई नवीन तकनीकों और स्वदेशी गौवंश के विकास एवं प्रजनन के लिए किए जा रहे कार्यों को आकर्षक मॉडल, रंगीन फोटो फ्लेक्स रूप में प्रदर्शित किया गया। कृषकों और पशुपालाकों के लिए प्रकाशित साहित्य और उपयोगी प्रचार–सामग्री का भी वितरण बड़े पैमाने पर किया गया। हरियाणा, पंजाब सहित अन्य प्रांतों से पहुँचे पशुपालकों और कृषकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राजुवास में 'एट होम' कार्यक्रम

67 वें राज्य स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह की पूर्व संध्या पर 'एट होम' कार्यक्रम वेटरनरी विश्वविद्यालय के 'दीवान–ए–आम' में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल, राजस्थान श्री कल्याण सिंह, और मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने शिरकत की। इस अवसर पर आयोजित समारोह में राज्यपाल ने 11 कलाकारों और प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर राज्य के मुख्य सचिव श्री सी.एस. राजन, वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, स्वतंत्रता सेनानी, मंत्रिमंडलीय सहयोगी, प्रमुख शासन सचिवों, विभिन्न आयोगों के अध्यक्ष, वरिष्ठ प्रशासनिक पुलिस व सेना के अधिकारी सहित गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पशुपालकों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण से पशु उत्पादन बढ़ाया जा सकता है: वन मंत्री श्री राजकुमार रिणवां

वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजकुमार रिणवां ने कहा है कि राज्य में पशुधन किसान का मित्र है जिसने विपरीत परिस्थितियों में भी हमारा साथ देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सम्बल प्रदान किया है। श्री रिणवां 15 जनवरी 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय के सभागार में चूरू जिले से आए कृषकों और पशुपालकों के दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा प्रशिक्षित 52 पशुपालकों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। वन मंत्री श्री रिणवां ने केन्द्र द्वारा पशुपालकों के लिए तैयार उन्नत पशुपोषण प्रशिक्षण संदर्शिका और टी.वी.सी.सी. राजुवास की "पशुचिकित्सा के नए आयाम" की पुस्तिकाओं का विमोचन किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा

कि राज्य सरकार ने देश में कौशल विकास प्रशिक्षण में राज्य को बढ़त दिलाई है। समारोह में श्री सत्यप्रकाश आचार्य जिला भाजपा अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. आर.पी. नायक मंचासीन थे। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

'पशुपालक कैलेण्डर-2016' का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने 4 जनवरी को "राजुवास पशुपालक कैलेण्डर–2016" का लोकार्पण किया। जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. आर.के. धूड़िया के द्वारा तैयार इस कैलेण्डर में विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की देशी गौवंश के रख–रखाव और अर्जित उपलब्धियों का समावेश किया गया है। वर्ष के प्रत्येक माह में पशुपालन के लिए आवश्यक हिदायतें, रोगोपचार और पोषण संबंधी जानकारियाँ भी दी गई है। इस कैलेण्डर में आकर्षक रंगों और मनभावन सामग्री में विश्वविद्यालय की तमाम गतिविधियों का दिग्दर्शन किया जा सकता है।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

चूरू जिले में 244 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, चूरू द्वारा 8, 11, 20, 22, 25, 27, 28 एवं 29 जनवरी, 2016 को गांव सिंगडी, घंटेल, देपालसर, रीबिया, छोटा खुडेरा, मालपुरा, जालेऊ एवं ढाढरिया में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं पशुस्वास्थ्य शिविर में 244 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा 301 पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, सूरतगढ (गंगानगर) द्वारा 4, 5, 8, एवं 14 जनवरी, 2016 को गांव सिगरासर, मोकलसर, घमडीया एवं संगर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 5 एवं 11 जनवरी को ऑन–केम्पस पशुपालक–किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 301 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, बाकलिया– लाडनूं द्वारा 4–6 जनवरी को केन्द्र परिसर में उरमूल खेजड़ी संस्थान के 5 ए.जी.ओ को पशुपालन प्रशिक्षण दिया गया केन्द्र द्वारा 20, 23 एवं 27 जनवरी को गांव कलवानी, मडाम तथा सिंघाणा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक में पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, टोंक द्वारा 20, 23 एवं 28 जनवरी को टोंक जिले के गांव रामनगर, निमोला एवं दादिया गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 87 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही जिले में 57 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7 एवं 8 जनवरी को गांव सिद्धरत तथा वीरवाडा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 57 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 14 एवं 29 जनवरी को गामडी देवल तथा सहगान महुडी गांव में एक दिवसीय पशुपालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 20 महिला पशुपालकों सहित कुल 57 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

वीयूटीआरसी, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 8 जनवरी को गांव नगला जोधसिंह में पशुपालक गोष्ठी तथा 12, 20 एवं 28 जनवरी को एक दिवसीय ऑन केम्पस पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 97 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा 7, 12, 23 एवं 28 जनवरी को गांव भगवानपुरा, कादेहेड़ा, गंदीफली एवं अरलिया गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर जिले में पशुपालन शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 13 एवं 27 जनवरी, 2016 को गांव ढाल एवं लामगरा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 86 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 7, 21 एवं 25 जनवरी, 2016 को गांव सडियारड़ा, आंवलहेडा एवं घोसंदा गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 28 जनवरी को केन्द्र परिसर में बकरी पालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर, हनुमानगढ़ द्वारा 7 व 20 जनवरी को गांव सरदार गढीया व डूंगराना में एक–दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 11–13 जनवरी, 20–22 जनवरी को भेड़ बकरी पालन तथा डेयरी प्रबंधन पर दो तीन–दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये गये। इन शिविरों में 128 कृषकों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

कृषि विज्ञान केन्द्र की तृतीय वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन 27 जनवरी को कृषि विज्ञान केन्द्र, संगरिया के सभागार में डॉ. पी.पी. रोहिल्ला, निदेशक, कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान जोधपुर की अध्यक्षता में किया गया। डॉ. राजेश धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, डॉ. नवीन सैनी एवं श्री अक्षय घिंटाला सहित हनुमानगढ़ जिले के सम्बन्धित विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे।

मुर्गियों का दीर्घकालीन श्वास रोग

माइकोप्लाज्मा गैलिसेप्टीकम द्वारा फैलने वाली यह बीमारी मुर्गियों के श्वसन तंत्र की दीर्घकालिक बीमारी है।

रोग प्रसार के माध्यमः–

- ऋतु में अचानक परिवर्तन
- असंतुलित आहार
- आंतों में कीड़ों का होना
- विटामिन "ए" की कमी होना
- कुक्कुट घरों में अत्यधिक नमी होना
- रोगी मुर्गियों के साथ स्वस्थ मुर्गियों का होना

रोग लक्षणः–

- साँस लेने में गुड़गुड़ाहट की आवाज ।
- रात के समय अधिक खाँसना व छींकना।
- दाना चुगना कम हो जाता है।
- सिर हिलने लगता है।
- आँख, नाख से पानी जैसा पदार्थ बहना।
- अण्डों का उत्पादन कम हो जाता है।
- मुँह खोलने पर गले के पिछले भाग में गाढ़े पीले रंग के पदार्थ का मिलना।

बचाव के उपायः–

- सर्द मौसम में कुक्कुट शाला को परदों से रात में ढ़क देना चाहिए ताकि अधिक ठंड कुक्कुट शाला में प्रवेश न कर सके।

- सुबह परदों को एकदम से नहीं खोलकर धीरे–धीरे खोलना चाहिए ताकि कुक्कुट शाला का तापक्रम एकदम नहीं गिरे।
- सर्दियों में कुक्कुट शाला में तापमान नियंत्रित करने के लिए भुखारी, हीटर व अन्य उपकरण की उपस्थिति सुनिश्चित कर लेनी चाहिए।
- कुक्कुट शाला में यदि छत पर पानी की टंकी रखी है तो इसे बोरी से ढ़क दें। कुक्कुट के पीने का पानी अत्यधिक ठंडा न हो जो कि रोग की तीव्रता को बढ़ाता है।

पोस्टर्मार्टम लक्षणः–

- हृदय के चारों ओर जमा हुआ सफेद पदार्थ व भीतरी भाग में हल्के पीले रंग का तरल पदार्थ मिलता है।
- जिगर में सूजन मिलती है एवं उसके ऊपर हल्के पीले तथा भूरे रंग की परत सी मिलती है।

उपचारः–

रोग होने की स्थिति में अपने नजदीकी चिकित्सा केन्द्र की सलाह के अनुसार उपचार करावें।

डॉ. दिनेश जैन, डॉ. तारा बोथरा,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9413300048)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही, जैसलमेर
चेचक/माता रोग	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, पाली
लँगड़ा बुखार/ठप्पा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौडगढ, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, टोंक, सीकर, जैसलमेर
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर
थिलेरियोसिस	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, बीकानेर, बांसवाडा, बूंदी
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	धौलपुर, बून्दी, डूँगरपुर, बीकानेर, सीकर, चित्तौड़गढ़, जैसलमेर
सर्रा (तिबरसा)	भैंस, ऊंट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा, सीकर
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

दुधारू गाय–भैंस को खरीदते समय ध्यान देने योग्य बातें

गाय व भैंस की खरीददारी करते समय कुछ विशेष जानकारी होना आवश्यक है क्योंकि दुधारू पशु को खरीदने में एक बड़ी पूंजी खर्च होती है। किसी भी दुधारू पशु को उसके दूध देने की क्षमता तथा उसके नस्ल के गुणों के आधार पर खरीदना चाहिए। अतः पशुपालक कुछ बातों को अमल में लाकर अच्छे दुधारू पशु का चयन कर सकते हैं।

❖गाय का शरीर सुगठित, गाय का गलकम्बल पतला, त्वचा लचकीली, लचकीली आँखें बड़ी–बड़ी तथा स्वभाव सरल, गर्दन पतली, रूप आकर्षक तथा देखने पर स्त्रित्व की झलक होनी चाहिए। पशु की सेहत देखकर पशु की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। बूढ़े पशु की अस्थि सन्धियाँ कमजोर हो जाती हैं और पशु धीरे–धीरे चलता है। उसकी त्वचा ढ़ीली हो जाती है और मुँह के दाँत गिर जाते हैं। बूढ़े पशु की आँख के पीछे और कान के बीच के टेम्पोरल क्षेत्रों में गढ्ढ़ा बन जाता है। इसके विपरीत युवा अवस्था की भैसों व गायों का शरीर सुन्दर, सुडौल, चुस्त, चमकदार त्वचा तथा चर्बी कम होती है।

❖सामान्यतया तिकोने आकार की गाय अधिक दुधारू होती है। ऐसी गाय की पहचान के लिए उसके सामने खड़े हो जाएं। इससे गाय का अगला हिस्सा पतला और पिछला हिस्सा चौड़ा दिखाई देगा। शरीर की तुलना में गाय के पैर एवं मुँह–माथे के बाल छोटे होने चाहिए। दुधारू पशु की चमड़ी चिकनी, पतली और चमकदार होनी चाहिए। आँखे चमकीली, स्पष्ट और दोष रहित होनी चाहिए। अयन पूर्ण विकसित और बड़ा होना चाहिए। थनों और अयन पर पाई जाने वाली दुग्ध शिरायें जितनी उभरी मोटी और टेडी–मेडी होगी पशु उतना ही अधिक दुधारू होगा।

❖दुधारू पशु का अयन सुविकसित, थन एक समान एवं आपसी दूरी समान होनी चाहिए। दूध दोहन के उपरान्त थन पूरी तरह से सिकुड़ जाना चाहिए।

❖दुधारू पशु को खरीदते समय हमेशा दूसरे अथवा तीसरे ब्यांत की गाय–भैंस को ही प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि इस दौरान दुधारू पशु अपनी पूरी क्षमता के अनुरूप खुलकर दूध देने लगते हैं और यह क्रम लगभग सातवें ब्यांत तक चलता है। इसके पहले अथवा बाद में दुधारू पशु के दूध देने की क्षमता कम रहती है। दूसरे–तीसरे ब्यांत के पशु को खरीदते समय प्रयास यह होना चाहिए कि गाय–भैंस उस दौरान एक माह की ब्याही हुई हो और उसके नीचे मादा बच्ची हो। ऐसा करने से उक्त पशु के दूध देने की क्षमता का पूरा ज्ञान होने के साथ ही बछड़ी मिलने से भविष्य के लिए एक गाय–भैंस और प्राप्त हो जाती है जो कि भविष्य की पूँजी है।

❖दुधारू पशु को खरीदते समय लगातार तीन बार दोहन करके देख लें क्योंकि व्यापारी चतुराई से काम लेते हैं और आपको पशु खरीदते समय मात्र एक बार सुबह अथवा शाम को ही दोहन करके दिखायेंगे। ऐसा करने से आपको प्रतीत होगा कि यह पशु अधिक दूध देने वाला है लेकिन सच्चाई यह नहीं होती है। व्यापारी एक समय दोहन नहीं करता अथवा कम दुग्ध दोहन करता है। जिससे दूध की मात्रा अयन में रह जाती है। इस कारण लगता है कि गाय–भैंस अधिक दूध देने वाली है। इसलिए दुधारू पशु की खरीददारी करते समय तीन बार लगातार दुग्ध दोहन अपने सामने अवश्य करा लेना चाहिए।

❖कई बार व्यापारी आक्सीटोसिन इंजेक्शन लगाकार दूध दुहते हैं। इससे बचने के लिए जब भी दूध निकालें तो अपने सामने कम से कम आधा घण्टा गाय को सामने रख फिर इसके बाद ही दोहन करवायें।

❖दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी सही आयु का पता लगाना आवश्यक होता है। पशु की सही आयु का पता लगाने के लिए उसके दांतों को देखा जाता है। मुँह को निचली पंक्ति में स्थायी दांतों के चार जोड़े होते हैं। ये सभी दाँत एक साथ नहीं निकलते हैं। दाँत (कृन्तक) का पहला स्थायी जोड़ा लगभग दो वर्ष में, दूसरा जोड़ा 2 साल 6 महीने पर तीसरा जोड़ा लगभग तीन से साढ़े तीन साल तथा चौथा जोड़ा चार साल 6 महीने पर विकसित होता है। पाँच से छः वर्ष की उम्र में सभी दाँत एक दूसरे से सटे, पूर्ण विकसित तथा मेहराबदार दिखाई देते हैं। लगभग बारह साल की उम्र में दाँत दूर–दूर हो जाते हैं, हिलने लगते हैं तथा तिकोने हो जाते हैं। जड़ जबड़े से बाहर निकल आती है तथा दाँत गिरने लगते हैं।

❖इस तरह से दाँतों को देखकर नई और पुरानी गाय–भैंस की सटीक पहचान की जा सकती है। औसतन एक गाय–भैंस 20–22 वर्षों तक जीवित रहती है। गाय–भैंस की उत्पादकता उम्र के साथ–साथ घटती चली जाती है। दुधारू पशु अपने जीवन के यौवन और मध्यकाल में अच्छा दुग्ध उत्पादन करता है, इसलिए दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी उम्र की सही जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है।

❖भैंस के सींग के छल्ले भी आयु का अनुमान लगाने में सहायक होते हैं। प्रथम छल्ला, सींग की जड़ पर प्रायः तीन वर्ष की आयु में बनता है। इसके बाद प्रतिवर्ष एक–एक छल्ला और आता रहता है। सींग पर छल्लों की संख्या में दो जोड़कर भैंस की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु कभी–कभी कुछ लालची लोग अधिक रूपया कमाने के चक्कर में दुधारू पशु खरीददार को धोखा देने के लिए रेती से छल्लों को रगड़ देते हैं इसलिए यह विधि विश्वसनीय नहीं कही जा सकती है। दूध देने वाले दुधारू गाय–भैंस के सींग पशु की नस्ल की पहचान का मुख्य चिन्ह होते हैं। यद्यपि सींग के होने या नहीं होने का पशु के दुग्ध उत्पादन की क्षमता पर कोई असर नहीं पड़ता है।

❖खरीदते समय अगर गर्भ की जाँच करने वाला कोई जानकार या पशु चिकित्सक हो तो उससे गर्भ जाँच करा लेना चाहिए। भैंस के सींगों का बारीकी से निरीक्षण कर लें कि कही दराती से घिसे हुए तो नहीं है। त्वचा की चमक पर धोखा खाने से पहले देख लेना चाहिए कि भैंस पर चमक पैदा करने वाला काला तैल तो नहीं लगा दिया गया है। दूध बढ़ाने के लिए चीनी, गुलकंद, ओवर फीडिंग करके भी व्यापारी दूध की मात्रा में वृद्धि करके दिखा देते हैं। इसकी पहचान पशु पर तीन चार दिन निगरानी कर की जा सकती है। कई बार व्यापारी गाय–भैंस के नीचे आवारा नवजात बाँध देते हैं (किसी और का) तथा उसे ताजी ब्याही बताकर बेचते हैं। इससे बचने के लिए बच्चे को उसकी माँ के नीचे लगाकर देखना चाहिए। भैंस के रंगे खुर, काजल लगी आँखों को सफेद कपड़े से पोंछकर देखना चाहिए।

❖कई बार व्यापारी कमजोर पशु के अयन में हवा भरवा देते हैं जिससे वह स्वस्थ, गर्भवती अथवा अधिक दूध देने वाली प्रतीत होती है। ऐसे पशु के फूले हुए अंगों पर दबाव देकर देख लेना चाहिए। दुधारू पशु की खरीद करते समय अयन और थनों की सावधानी से जाँच करानी चाहिए। यदि थन में गाँठ, सूजन आदि के लक्षण हैं तो थनैला हो सकता है। ऐसे पशु को भूलकर भी नहीं खरीदना चाहिए। दूध देने वाली गाय–भैंस की जाँच हेतु उसे ढ़लान वाले स्थान पर पीछे का हिस्सा करके बिठाकर देखने से पता लगाया जा सकता है। हमेशा ऐसे पशु को खरीदने का प्रयास करना चाहिए जिसका जन्म, प्रजनन संबंधित रिकॉर्ड रखा गया हो। यदि पशुपालक सभी बातों को सावधानीपूर्वक अमल करें और दुधारू पशु को खरीदें तो निश्चित रूप से अधिक लाभ के साथ–साथ धोखे से भी बचा जा सकेगा।

–डॉ रजनी अरोड़ा,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9414080359)

अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें

साहीवाल गौ नस्ल –गौरव प्रदेश का

साहीवाल गौवंश भारतीय प्रायद्वीप की सर्वोतम किस्म की दुधारू नस्ल है जोकि उष्णकटिबंधीय जलवायु में अपनी दूध उत्पादन क्षमता के लिए सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। साहीवाल का उपयोग अवर्गीकृत पशुओं के सुधार के लिए किया जाता रहा है। यह नस्ल चिंचड़ों तथा अन्य बाह्य परजीवियों के प्रति प्रतिरोधी होती है और गर्म जलवायु को आसानी से सहन कर सकती है। साहीवाल नस्ल के पशुओं को लम्बीबार लोला, मुलतानी आदि नामों से भी जाना जाता है। भारत में इस नस्ल का मुख्य प्रजनन क्षेत्र पंजाब का फिरोजपुर, अमृतसर तथा राजस्थान का गंगानगर जिला है। इस नस्ल के पशु प्रायः लंबे, मोटे तथा सम्मित भारी भरकम शरीर वाले होते हैं। इनकी लटकती हुई चमड़ी इनकी विशिष्ट पहचान है। इनका रंग गहरा लाल से हल्का लाल होता है। इसकी आँखों के चारों ओर गेरूएं रंग की धारी पाई जाती है। लाल सिंधी से साहीवाल को पहचानने के लिए थूथन का रंग महत्वपूर्ण है। साहीवाल का थूथन हल्के रंग का तथा लाल सिंधी का गहरा काला होता है। इसके सींग छोटे से मध्यम आकार के तथा अंदर की ओर घूमे हुए होते हैं। नर व मादा पशु का भार लगभग 540 कि.ग्रा. तथा 327 कि.ग्रा. होता है और ऊँचाई क्रमशः 170 एवं 124 से.मी. होती है। इस नस्ल के पशुओं का प्रति ब्यांत औसत दुग्ध स्त्रावण 2325 कि.ग्रा. होता है तथा दुग्ध वसा भी अधिक लगभग 4.9 प्रतिशत होती है। प्रथम ब्यांत के समय आयु लगभग 41.7 माह तथा ब्यांत अंतराल 15.6 माह पाया जाता है। इस नस्ल का उपयोग अनेकों विदेशी नस्लों के उन्नयन एवं सुधार में किया गया है। साहीवाल नस्ल के लिए स्थापित झुण्ड पुस्तिका में पंजीकरण हेतु पशु के 300 दिन का न्यूनतम दुग्ध उत्पादन 1700 कि.ग्रा. होना चाहिए। साहीवाल देशी गौवंश के उन्नयन एवं संवर्द्धन का कार्य राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कोडमदेसर (बीकानेर) स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर किया जा रहा है। केन्द्र पर वर्तमान में साहीवाल नस्ल के 399 गाय, सांड, बछडे–बछड़ियां हैं। कोड़मदेसर पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर साहीवाल नस्ल की प्रथम दुग्धकाल की गायें मौजूद हैं जिनमें श्रेष्ठतम नस्ल से 25 लीटर प्रतिदिन का दूध प्राप्त किया गया है। इन गायों के प्रथम वर्ष में ही 7.8 लीटर प्रतिदिन का वेट औसत इनसे 3 हजार लीटर दूध उत्पादन प्रति दुग्धकाल में होना प्रदर्शित करता है, जो कि राष्ट्रीय पशु आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो के 2325 लीटर प्रति दुग्धकाल के औसत से कहीं अधिक है। केन्द्र पर उन्नत तकनीक और प्रबंधकीय उपायों को लागू करके साहीवाल गाय से 25 लीटर दूध प्रतिदिन तक प्राप्त किया गया है। केन्द्र द्वारा अब तक 4 सांड पशुपालकों एवं गौशालाओं को वितरित किए जा चुके हैं।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

राजुवास का हाइटेक पुस्तकालय

वेटरनरी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय आधुनिक तकनीक का हाइटेक पुस्तकालय है जो ऐतिहासिक बिजेय सिंह भवन के एक हिस्से में स्थित है। वर्ष 1954 में राज्य के एक मात्र पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय में इसकी स्थापना की गई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा दी जाने वाली वित्तीय राशि से पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विषय की उच्च कोटि की पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं जिनका उपयोग शिक्षण और शोध के लिए प्राध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है। पुस्तकालय सेवाओं में वेट/बीस्ट सी.डी. रोम, पशुओं के चिकित्सकीय कार्यो की वीडियो कैसेट्स, बुक्स सी.डी. उपलब्ध हैं। जिससे पशुचिकित्सा एव पशु विज्ञान के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे शोध की अद्यतन सूचना उपलब्ध करवाई जाती है। पुस्तकालय में विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को इलेक्ट्रोनिक रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाने के लिए कृषि में ई–स्त्रोतों की संघीय व्यवस्था (CERA) भी सुलभ है। देश के कृषि विश्वविद्यालयों में किए गए शोध कार्यों (डाटाबेस ऑफ पीएच.डी. थिसिस) भी ''कृषि प्रभा'' में यहां उपलब्ध है। ई–ग्रन्थ से जुड़े इस पुस्तकालय में राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में उपलब्ध पाठ्य और अन्य संदर्भ सामग्री भी कोहा सॉफ्टवेयर की मदद से सुलभ है। पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री की सुरक्षा के लिए सी.सी.टीवी कैमरे लगे हैं। पुस्तकों के आदान–प्रदान के लिए इस पुस्तकालय में रेडियो फ्रिक्वेंसी आइडेन्टीफिकेशन तकनीक प्रयुक्त की जाती है। यह पुस्तकालय पूरी तरह से हाइटेक है। वाचनालय में हिन्दी–अंग्रेजी भाषा की पत्र पत्रिकाएं, सामान्य और प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बद्ध पुस्तकें भी नियमित मंगवाई जाती है। यहां एक उपपुस्तकालय अध्यक्ष, एक प्रोफेशन सहायक व एक लाइब्रेरी सहायक और चार सहकर्मी कार्यरत हैं।

पशुओं को अरगट की विषाक्तता से कैसे बचायें

पशुपालकों ने कई बार देखा होगा कि उनके पशुओं की पूंछ का आखिरी हिस्सा खून से लथपथ हो जाता है तथा पूंछ पर ताजा घाव दिखाई देते हैं। पशुपालक यह मानते हैं कि किसी दूसरे पशु ने पशु की पूंछ पर पांव रख दिया है या फिर दूसरे पशु ने उनकी पूंछ मुंह से काट ली है। इसी प्रकार कान के शीर्ष भाग भी गलकर अथवा सूख कर गिरने लगते हैं। यह एक सामान्य अवस्था नहीं है, यह विषाक्तता है जो क्लेविसेप्स परप्यूरिया नामक फफूंद द्वारा बनाये गये जहर के चारे के साथ लगातार सेवन करने से उत्पन्न होती है। पशुओं में अरगट विषाक्तता को लक्षणों के आधार पर आसानी से पहचाना जा सकता है जैसे कि छोटे पशुओं में बढ़ोतरी में कमी व बड़े पशुओं में दूध उत्पादन में कमी आना, गर्भित पशुओं में गर्भपात होना, पूंछ व कानों का गलकर गिरना, शरीर की त्वचा व बालों की चमक में कमी आना और अत्यधिक लार का बनना एवं गिरना इत्यादि लक्षण प्रमुख हैं। इस विषाक्तता का कोई औषधीय बचाव नहीं है। पशु चारे को नमी से बचायें। वर्षाकाल अथवा सर्दी के समय ओस इत्यादि से चारा–तूड़ी भीगकर काली हो जाती है जो कि फफूंद के उगने से होता है। ऐसे काले चारे को पशुपालक चारे के रूप में काम न लेकर उसे तुंरत जला दें। दूषित चारा न खिलाने पर कुछ हफ्तों में पशु सामान्य अवस्था में लौटकर स्वस्थ हो जाते हैं। पशुओं को अच्छी गुणवत्ता वाला चारा और उचित मात्रा में बांटा एवं लवण दिया जाना चाहिए, ताकि इस प्रकार की परेशानी एवं हानि से बचा जा सके।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सफलता की कहानी

बकरी पालन व्यवसाय से मिले नये आयाम

अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी हर युवक का सपना होती है, लेकिन बढती बेरोजगारी के बीच यह किसी चुनौती से कम नहीं है लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो स्वरोजगार को चुनकर बेरोजगार युवाओं को नई राह दिखा रहे हैं। एक ऐसे युवा किसान हैं गोगामेडी, नोहर निवासी बजरंगलाल जो बकरी पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर समृद्ध हो रहे हैं। बजरंग एक मध्यम परिवार के 28 वर्षीय युवा किसान हैं जिसके परिवार का जीविकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय खेती ही रहा है, क्योंकि वर्षा आधारित कृषि से आमदनी कम होने से परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही थी। इस वजह से बजरंग का खेती से मोह भंग होने लगा। परन्तु कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर के वैज्ञानिकों से मुलाकात और उनके सुझावों पर बजरंग ने खेती के साथ बकरी पालन व्यवसाय अपनाने का निश्चय किया।

सर्वप्रथम वैज्ञानिकों द्वारा उसे बकरी पालन व्यवसाय पर प्रशिक्षण दिया गया और अच्छी आमदनी के लिए द्विउद्देश्य वाली अच्छी नस्ल के चुनाव के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात उसने द्विउद्देश्य वाली नस्ल की 20 बकरी व एक बकरा खरीद कर अपने व्यवसाय की शुरूआत की और उनके पोषक चारे के लिए वैज्ञानिकों के सहयोग से एक अजोला की यूनिट भी लगाई। वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर भ्रमण के दौरान दिये गये सुझाव, सलाह, मार्गदर्शन एवं बजरंग की रूचि, लगन व मेहनत की बदौलत उसका व्यवसाय दिन–दुगुनी रात–चौगुनी उन्नति कर रहा है। खेती से चारे का प्रबन्ध हो जाने पर कृषि उत्पाद का सदुपयोग भी हो जाता है। प्रशिक्षण व विशेषज्ञों से प्राप्त जानकारी एवं नवीनतम तकनीकों के अनुसार हरे चारे के अभाव के समय वह हरे चारे का संरक्षण भी करता है तथा टीकाकरण व कृमिनाशक दवाओं और खनिज लवणों का उपयोग भी करता है जिससे उसके व्यवसाय पर होने वाला खर्च भी काफी कम हुआ है। इस प्रकार बजरंग अपनी अतिरिक्त आमदनी से गदगद है वहीं दूसरी तरफ उन्होंने बकरी पालन व्यवसाय को उंचाईयों पर पहुंचा दिया। वे सफलता का पूरा श्रेय अपने परिवार एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर को देते हैं।

–श्री बजरंग लाल, गोगामेड़ी, नोहर, हनुमानगढ़ (मो. 8290034773)

निदेशक की कलम से...

जैविक पशु आहार का उत्पादन हमारे हित में है

प्रिय कृषक एवं पशुपालक भाईयों !

जैविक और संतुलित आहार समय की मांग है। पशुओं के आहार का मुख्य स्त्रोत खेतिहर उपज है। हरे व सूखे चारे, खल तथा चूरी पशुओं के आहार में शामिल है। पशुपोषण में स्वस्थ पशु को खिलाया जाने वाले आहार में सूखा व हरा चारा 2/3 भाग तथा दाना 1/3 के अनुपात में दिया जाता है। फसल के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उपयोग में लाये जाने वाले कृषि रसायनों से अवांछित तत्व मृदा द्वारा या सीधे पौधे के बाह्य भाग द्वारा फसलों में पहुंच जाते हैं तथा इन्हीं फसलों से प्राप्त चारे, दाने व अन्य उत्पादों के सेवन से ये हानिकारक तत्व पशु के शरीर में पहुंचते हैं। इन पशुओं से उत्पादित दूध व अन्य खाद्य उत्पादों के सेवन से हानिकारक रसायन मानव शरीर में पहुंचकर कैंसर, एलर्जी, स्वायु तंत्र, पाचन तंत्र संबंधी अनेक असाध्य रोगों का कारण बनते है। इन हानिकारक रसायनों से पशु तथा मनुष्य दोनों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर बन जाती है। यदि पशुओं के लिए जैविक चारा उपलब्ध कराया जाए तो यह पशुओं के स्वास्थ्य में वृद्धि लाता है। इससे पशु उत्पादों में स्वाद तथा पौष्टिकता की वृद्धि होती है। पशुपालक भाईयों को जैविक पशुपालन के लिए जैविक खेती से चारा फसलों का उत्पादन करना होगा। कृषकों और पशुपालकों को मृदा का परीक्षण या भूमि की जांच करवा लेनी चाहिए। मृदा जांच से भूमि में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा की जानकारी मिलती है। इससे उर्वरकों के अंधाधुंध और असंतुलित उपयोग पर रोक लगाई जा सकती है। समय पर मृदा की जांच कर समस्या को दूर किया जा सकता है। अतः पशुपालक व कृषकों द्वारा वैज्ञानिक विधि से जैविक खेती व पशुपालन करने से फसलों तथा पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि होगी । इससे उत्पादित होने वाले जैविक कृषि उत्पादों को उचित मूल्य भी मिल सकेगा। **–प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **फरवरी 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. मनीषा माथुर** 9414283823 पशु व्याधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में सर्दी में होने वाले निमोनिया रोग के कारण एवं उनका निदान	04.02.2016
2	**प्रो. विजय कुमार चौधरी** 9461472793 पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	मरू क्षेत्र में देशी गौवंश का संरक्षण एवं संवर्द्धन	11.02.2016
3	**डॉ. अशोक गौड़** 9461906288 इथ्नो वेटरनरी एवं वैकल्पिक औषधि केन्द्र, राजुवास, बीकानेर	पशुचिकित्सा में इथ्नो वेटरनरी एवं वैकल्पिक औषधि की उपयोगिता	18.02.2016
4	**डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा** 9251415775 पशु भेषज एवं विष विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में कृषि रसायनों की विषाक्तता	25.02.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : फरवरी, 2016

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया